अथवा

(ब) विभावैरनुभावैश्च सात्विकैर्व्यमिचारिभिः,

आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायीभावो रसः स्मृतः॥

5. निम्नलिखित पद्यों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(अ) पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवभासी-

च्छ्लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।

कालक्रमेण जगतः परिवर्तमानाः,

चक्रारः पंक्तिरिव गच्छति भाग्य पंक्तिः।

अथवा

(ब) दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः,

स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं,

प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम्॥

6. नाट्यशास्त्रं के अनुसार नाट्य रसों का सामान्य परिचय दीजिए।

7. ''उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशेष्यते'' कथन की समीक्षा सोदाहरण कीजिए।

8. दशरूपक के अनुसार सात्विक भावों का प्रतिपादन कीजिए।

9. नाटक की कार्यावस्थाओं का वर्णन कीजिए।

MASA–06

June – Examination 2022

M.A. (Final) Examination

SANSKRIT

(नाटक तथा नाट्यशास्त्र)

Paper : MASA-06

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का है।

1. (i) 'उत्तररामचरितम्' में सीता विषयक अपवाद की सूचना कौन देता है तथा किस अंक में देता है ?

(ii) 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक का नाम क्या है और क्यों ?

(iii) रत्नावली का दूसरा नाम और उसकी सखी का नाम लिखिए।

(iv) नाट्यशास्त्र की दृष्टि से उदयन किस प्रकार का नायक है ?

(v) 'दशरूपकम्' के अनुसार नाट्य का लक्षण लिखिये।

(vi) अर्थोपक्षेपक कितने हैं ? नाम लिखिये।

(vii) नाट्यशास्त्र के अनुसार अभिनय कितने प्रकार का होता है ?

(viii) 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण किस घटना के आधार पर किया गया है ?

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए—

(अ) अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना,
तथा वृत्तं मापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितैः,
अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्॥

अथवा

(ब) व्यतिषजति पदार्थान्तरः कोऽपि हेतु—
र्न खलु बहिरूपाधीन प्रीतयः संश्रयन्ते।
विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकमं,
द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः॥

3. निम्नलिखित पद्यों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी में कीजिए—

(अ) राज्यं निर्जितशत्रु योग्य सचिवे न्यस्तः समस्तो भरः,
सम्यक्पालन लालिताः प्रशमिताशेषोपसर्गाः प्रजाः।
प्रद्योतस्य सुता वसन्तसमयत्वं चेति नाम्ना धृतिं,
कामः काममुपैत्वयं मम पुनर्मन्ये महानुत्सवः॥

अथवा

(ब) श्रीरेषापाणिरप्यस्याः पारिजातस्य पल्लवः।
कुतोऽन्यथा स्रवत्येष स्वेदच्छद्मामृतद्रवः॥

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत माध्यम से कीजिए—

(अ) आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु,
व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः,
योऽपीतिहासादिवदाह साधुः,
तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय॥